25-8-12 ओम् शान्ति मधुबन

दादी जी के पांचवे पुण्य स्मृति दिवस पर विशेष भोग तथा वतन का दिव्य सन्देश

–दादी गुल्जार

(सभी भाई बहिनों के आवाह्न पर दादी जी वतन से मिलने के लिए साकार में आई और नयन मुलाकात करते हुए मधुर महावाक्य उच्चारण किये)

सभी का प्यार मिल रहा है, चाहे लास्ट में भी बैठे हो आप सबका प्यार पहुंच रहा है। अभी बापदादा यही चाहते हैं कि दु:खियों का सहारा बनो। इसके लिए ज्वालामुखी योग के ऊपर अटेन्शन ज्यादा दो। चाहे लौकिक कोई भी कारोबार करो लेकिन यह ज्वालामुखी योग सदा ध्यान पर रहे क्योंकि आप ही हो जो परिवर्तन करने वाले हो। आप ही ज्वालामुखी द्वारा परिवर्तन करेंगे, सुख का संसार लायेंगे इसलिए जो एडवांसपार्टी में हैं, सभी आप सबके प्रति याद और प्यार देते हुए यही कहते हैं कि अब जल्दी करो। हम भी इन्तजार कब तक करेंगे! अभी समाप्ति के समय को समीप लाओ। आज से लेके यह धुन लगाओ अपने राज्य को लाना ही है। सुना। क्या करना है।

(8000 यूथ आये हैं) अच्छा है लेकिन यूथ ऐसे ही निर्विघ्न यूथ रहना। यूथ को देखकर हम सब भी खुश हैं, बापदादा भी खुश हैं। लेकिन यूथ यूथ ही रहें, जरा भी संकल्प में भी फर्क नहीं आये। ऐसे अविनाशी तीव्र पुरुषार्थी रहना। कभी तीव्र कभी कम नहीं, अभी तीव्र पुरुषार्थ का समय है। अच्छा, बापदादा खुश है। आप लोगों की सेवा से खुश है। खुश आप भी हैं, बाप भी है और हम सब भी हैं। चलेंगे तो साथ ही।

(विदेश वाले भी याद कर रहे हैं) विदेश वालों की एक विशेषता बाप को भी अच्छी लगती है, हम सब भी देखते रहते हैं, वह जो सोचते हैं वह प्रैक्टिकल में करके ही दिखाते हैं। अभी विदेश में लहर है तीव्र पुरुषार्थ की और सेवा को तीव्र करने की। ऐसे भारत में भी सेवा का उमंग अच्छा है। लेकिन ज्वालामुखी योग उस तरफ थोड़ा और अटेन्शन चाहिए। सेवा में जाते हैं ना तो थोड़ा सा बातें होने से थोड़ा इफेक्ट आ जाता है। अभी सबका एक ही संकल्प हो कि हमको मिलके अपना राज्य लाना है। लाना है, लाना है, लाना है।

(प्लैटिनम जुबली के समापन का फोल्डर दादी को दिया गया) इस प्रोग्राम में सभी ने रूचि अच्छी ली है। अच्छा। (ओमव्यास ने गीत गाया - न ये चांद होगा, न तारे रहेंगे...)

वतन का दिव्य सन्देश:-

आज तो विशेष सभी के मन में दादी का आह्वान था। तो हम तो पहले बाबा के पास गई। बाबा के पास आदि की जो शुरू से लेके हमारी दादियां बोर्डिंग से लेके निमित्त बनी, वह सब पुरानी-पुरानी दादियां बाबा के साथ बैठी थी और वहाँ रूहरिहान चल रही थी, बाबा भी उनसे रूहरिहान कर रहा था कि अभी आपको क्या करना है? सेवा तो सभी कर ही रहे हैं लेकिन सेवा के साथ अभी आप लक्ष्य रखो कि हमें अभी अपना राज्य लाना है। इस संसार के दु:ख को बदलके सुख में लाना है क्योंकि बाबा ने कहा तो आप लोग तो यहाँ मजे में बैठे हो लेकिन दुनिया के लोग अन्दर से कितने दु:खी हैं, वह आपको अभी इतना महसूस नहीं हो रहा है कि इन्हों को दु:ख से छुड़ाना है। तो अभी अन्दर से लाओ कि हमारे ही भाई बहन जो दु:खी हो रहे हैं, उन्हों को सुख की

दुनिया में ले जाना है या मुक्ति में ले जाना है। तो अभी सबको यह ध्यान रहना चाहिए - यही बाबा उन सभी को कह रहे थे और वह भी कह रहे थे कि हम तो बाबा अभी भले साकार में है लेकिन कनेक्शन तो बदल गया है, तो हम क्या करें? तो बाबा ने कहा आप भी यही धुन लगाओ कि हमको इन सबको मुक्तिधाम में ले जाना है और जो बाबा के बच्चे हैं उनको अपने राज्य में ले जाना है। तो बाबा बार-बार उनको यही कह रहा था कि अभी इस संकल्प को तीव्र करो। सेवा कर रहे हो उससे बाबा खुश है कि सेवा का उमंग अच्छा है लेकिन सेवा में भी एम यही हो कि इन्हों को दु:ख से छुड़ायें। आपके पास दु:खियों के आवाज आने चाहिए। तो अभी यह थोड़ा रहमदिल का रूप आवश्यक है।

बाकी जो सभी मुख्य हैं वह सब बाबा के पास थे। भाई थोड़े थे, बहिनें ज्यादा थी। भाई भी मुस्करा रहे थे और बाबा को हाँ हाँ कर रहे थे और कह रहे थे कि बाबा आपने जो कहा है वह हम अवश्य करेंगे। तो उन्होंने कहा कि हम एडवांस में हैं तो इसमें भी एडवांस जायेंगे। सभी उमंग में थे। फिर बाबा ने सबको प्यार से भोग खिलाया। फिर बाबा ने कहा कि सभी ने दादी को जितना प्यार से याद किया है, तो दादी को उतना ही प्यार से कहता हूँ कि जाओ और इन्हों से मिलकर आओ। फिर दादी यहाँ आई। आप सबके साथ दादी ने क्या किया, वह तो आप जानो। फिर दादी जब वापस वतन में आई तो बाबा से कहा कि बाबा सभी बहुत खुश हुए और आपने मुझे भेजा उसके लिए थैंक्स, सभी की इच्छा पूरी हुई। फिर बाबा ने मुझे भी साकार वतन में भेज दिया।

अभी आप सभी क्या करेंगे? ज्वालामुखी योग। उसके ऊपर विशेष अटेन्शन देके हमको संसार को जल्दी से जल्दी परिवर्तन करना है, यह है आजकल का काम। अच्छा। ओम् शान्ति।

ओम शान्ति 24-8-12 मधुबन

''निमित्त भाव रख, सच्चाई प्रेम, हिम्मत और विश्वास को धारण करो''

– दादी जानकी

आज सभी दादी जी को विशेष याद कर रहे हैं। सभी के दिलों में दादी है। दादी ने अपना यादगार ऐसा बनाया है जो बाबा को प्रत्यक्ष करने का, चाहे स्थापना के कार्य में वृद्धि के निमित्त बनी है। मैं तो 1974 से लेकर विदेश में रही हूँ, पर सूक्ष्म कनेक्शन बेहद में रहने का दादी जी से ऐसा रहा है, जो समानता में रहे हैं। यह एक वण्डर है। दादी ने अव्यक्त बाबा का पार्ट भी बड़े अच्छे ढ़ग से चलाया है, जो आज अव्यक्त पार्ट भी कितनी सेवा कर रहा है।

बाबा ने कहा था कि मुरली रिवाइज होगी। आज उसी रिवाइज मुरली से सारी रचना को पालना मिल रही है। इतने सब कार्य को दादी जी ने निमित्त बनके किया है। तो मैं पूछती हूँ कि मैं क्या कर रही हूँ? दादी ने किया, दीदी ने किया, मम्मा ने किया पर मैंने क्या किया? मुझ आत्मा को परमात्मा बाप ने शरीर में अभी तक क्यों बिठाया हुआ है! बाबा को साथी बनाके, निमित्त भाव से बाबा ने चलाया, सच्चाई और प्रेम, हिम्मत और विश्वास से अभी तक सफलता हुई है। अभी सम्पूर्णता हमारे सामने खड़ी है।

साइलेन्स में रह याद के गहरे अनुभव करो। एक तरफ कर्मातीत स्थिति, दूसरी तरफ फरिश्ता स्थिति। पीछे देवता बनेंगे। पर कर्मातीत बनने के लिए नींव इतनी अच्छी मजबूत हो जो कोई हिसाब-किताब पीछे खीचें नहीं, न ही मुझे खींच हो। इस स्थिति में प्रैक्टिकल रहने का अनुभव होगा तो फरिश्ता रूप की सेवा जो बाबा चाहता है वो होगी। बाबा के साथ ग्लोब को, सारे विश्व को, हर आत्मा को कैसे बाबा सकाश दिला रहा है, वो कर सकेंगे।

हमारे मधुबन में भी कितनी सेवायें हैं, हरेक आत्मा को अपना पार्ट मिला हुआ है। हरेक जितना पुरुषार्थ करे, उसके लिए स्वतन्त्र है। बाबा हरेक बच्चे को साथ देता है। परन्तु कई कम्पैरिज़न, भेंट करके आगे जाना चाहते हैं। यह देह-अभिमान छोड़ता नहीं है, देह-अभिमान जहाँ यूज़ होता है वहाँ ईश्वरीय आकर्षण नहीं रहती है।

बाबा ने जो श्रीमत दी या डायरेक्शन दिये हैं उसमें मनमत कभी भी नहीं चलाई है। जो मनमत चलाते हैं वो अपनी एनर्जी खर्च करते हैं। इसमें अपना खर्चा नहीं होता है, तो शक्ति खत्म नहीं होती है। मेरा अनुभव है, मेरा विचार है... मैं यह भी कहने से बचती हूँ, इसमे सेफ्टी बहुत है।

बाबा ने कहा मैंने यह शरीर शिवबाबा को लोन पर दिया है। लेकिन इस आधार से मैं राज्य पद थोड़ेही पाऊंगा। मुझे अपना पुरुषार्थ तो करना ही है ना। शरीर एक होते दोनों साथ हैं। हमको भी ऐसे ही सेवा करनी चाहिए। बाबा ने तो लोन पर दिया, लेकिन हम तो समर्पित ही हो गये। बच्चे ही बन गये तो बाप समान हो गये ना। तो मेरा न तन, न मन। मुख्य बात अच्छी यह हुई है कि तन-मन सब सफल हो गया है।

पालना, पढ़ाई, प्राप्ति तीनों की वैल्यु बहुत है। सारा दिन देखो, हमारी पालना अभी तक भी कौन कर रहा है, पढ़ाने वाला कौन है? उससे जो प्राप्ति है उससे ही तो नाच रहे हैं, यह नशा हमेशा रहे। अच्छा।

25-8-12

ज्ञान योग के बल से दादी समान सच्चा बेदाग हीरा बनना है

– दादी जानकी

सभी दादी के प्यार में बैठे हो ना। जितना दादी ने प्यार दिया है, कितना दिया है! रिटर्न में क्या करेंगे? दादी की सच्चाई सफाई सादगी तीनों से कितनी यज्ञ सेवा वृद्धि को पाई है। यह है बाबा के हाथ में हाथ देने का प्रैक्टिकल प्रमाण। जब बाबा अव्यक्त हुआ तो दादी ने जी मुरली से पालना दी है। पूरे परिवार को अपना बनाया है।

हमारी मीठी प्यारी दादी लास्ट में लण्डन में आई थी, मैं कहूं दादी आप कितनी मीठी हो। दादी कहे बाबा मीठा है। मैं दादी बाबा बोलूं, या बाबा-दादी बोलूं। मुझे कहा मुझे लण्डन इतना अच्छा लगता है मैं यहाँ बैठ जाती हूँ तुम मधुबन चली जाओ। इतना अच्छा सबको प्यार दिया। जब मैंने कहा मैं मधुबन जाती हूँ आप यहाँ बैठो, तो शाम को बदल गई। यह लाडकोड, प्यार रहा है। यही अच्छी विधि है, पुराने देह संबंध से न्यारा रहने की। कोई पुराना स्वभाव संस्कार भी न रहे। यह प्यार सच्चा सोना बनाता है। हीरे मिसल जीवन, सच्चा हीरा ..बेदागी

हीरा बन जाते हैं। कोई भी छिपा हुआ दाग न हो। ऐसा हर एक आज संकल्प करे। सच्चा सोना बनना है तो अब बनना है, मुझे बनना है। सूक्ष्म ज्ञान योग के बल से अलाए निकलती जाती है।

आजकल बाबा की प्रेरणा अनुसार प्रैक्टिकल संकल्प और समय सफल करने से हीरे मिसल लाइफ बन जाती है। हीरो एक्टर कहा जाता है फिर हीरे जैसी जीवन गाई हुई है। यह गीत भी अच्छा लगता है – गुण और अवगुण में कितना अन्तर है। वह हीरा है, वह पत्थर है। हीरे मिसल जीवन बनानी है तो सर्वगुण सम्पन्न बनना है। कोई भी अवगुण हमारे में न रहे, मैं किसका अवगुण नहीं देखूँ। किसका अवगुण देखना भी अवगुण है, यह बड़ी भूल हो जायेगी।

शक्तियां वैल्युज़ को धारण करने मे साथ देती हैं। कोई भी शक्ति की कमी है तो अवगुण अन्दर छिपके अपने पास भी बैठ जाता है और दूसरों का भी अवगुण देख लेता है।

दादी को मैं याद करती हूँ, तो दादी को देखा सर्वगुणों में सम्पन्न थी। कभी हमने आपस में किसका अवगुण वर्णन नहीं किया। दादी ने मुझे लण्डन सेवा के लिए भेजा, एक दो को रिगार्ड देना, एक दो की विशेषता को वैल्यु देना, यह हम दादी से सीखी हूँ। हर एक में विशेषता है, यही बाबा ने हम सब बच्चों को सिखाया है। यह पढ़ाई इतनी अच्छी है, पढ़ाई का इतना कदर है जो दिखाई पड़ता है, कि भविष्य की प्रालब्ध पढ़ाई से बन रही है, वह मैं महसूस कर रही हूँ। पढ़ाई एक है, पढ़ाने वाला एक है। सबका बाप, शिक्षक और सतगुरू है। पढ़ाई को पढ़ाने में बहुत साथ दिया है। शिक्षक भी फिर सखा भी है। सतगुरू भी है, श्रीमत देता है। प्यार से पढ़ाई माना श्रीमत। बाप का फरमान है मामेकम्, मनमनाभव। एक एक अक्षर में इतना रहस्य भरा हुआ है। जो गीता के शब्द हैं हे अर्जुन, अर्जुन कहता है भगवन आपका जो ज्ञान है वह गुह्य गोपनीय रहस्ययुक्त है। बड़ा प्यार पैदा होता है। रहस्ययुक्त है। ज्ञान को अच्छी तरह से मनन चिंतन करते हैं तो स्थिति सत चिंत आनंद स्वरूप बन जाती है। सेवा भले कितनी भी अच्छी चल रही है, चलती रहेगी। मेरी भावना है आज दादी के दिन पर हर एक अपना संकल्प करे स्थिति ऐसी बनाओ जैसे दादी को याद करके सभी प्यार से यहाँ पहुंच गये हो। दादी के प्यार में क्या रिटर्न देवें। मिठरा मीठी वाणी बोल... मीठी वाणी कैसे निकलेगी। दिव्य दृष्टि दाता, दिव्य बुद्धि दाता, बाबा ने हमको त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी बनाया है। सदा चक्र घूमता रहे। इतनी अच्छी चक्र की नॉलेज बाबा ने दी है। सारा दिन चक्र की नॉलेज बुद्धि में है और कुछ नहीं है। थे हैं और होंगे। कितना नशा चढ़ता है। खुशी, नशा, मस्ती तीनों में अन्तर है ना। जब मस्ती चढ़ती है तो सब सुध-बुध भूल जाती है। नशा चढ़ता है जब प्रैक्टिकल करते हैं फिर डायरेक्ट खुशी होती है बाबा मिला है। प्रैक्टकिल लाइफ में नशा चढ़ता है फिर मस्ती अनेक कार्य सहज करा देती है। अच्छा - ओम् शान्ति।